दिनांक :- 03-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- नौ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन तथा प्रथम विश्व युद्ध।

प्रथम युद्ध मे चीन की सहभागिता का एक तीसरा लाभ मित्र राष्ट्रों द्वारा चीन के बंदरगाहो मे फंसे जर्मनी की मालवाहक जहाजों को इस्तेमाल करना था। 1917 ई० मे ऐसे मालवाहक जहाजों का इस्तेमाल की मांग बढ़ गई थी। अतः मित्र राष्ट्र जल्द से जल्द युद्ध मे चीन को घसीटना चाहते थे।

चीन में जर्मनी का दरवाजा बंद होते ही सुदूर एंव पूर्व में जर्मनी की गतिविधियाँ बंद हो गई अनेक जर्मन वहाँ से निकाल-बाहर किए गए तथा कुछ को युद्धकाल तक नजरबंद कर दिया गया। चीन की इस कार्रवाई से जापान और इंगलैंड बहुत खुश थे। क्योंकि उन्हें वहाँ जर्मनव्या पारिक प्रतिष्ठान थे जिनका उपयोग वह युद्ध समाप्ति के बाद करना चाहता था। लेकिन अब ऐसा करना संभव नही रह गया था क्योंकि चीन की जर्मन संपत्ति को अलग कर दिया था तथा जर्मन एंव आस्ट्रियाई नागरिकों को नजरबंद कर दिया था।

युद्ध में चीन के प्रवेश के राजनीतिक परिणाम

संयुक्त राज्य अमरीका के कहने पर चीन प्रथम

युद्ध मे शामिल हुआ था। अतएव, कुछ समय
तक इसने उसके निर्देशानुसार काम किया।
चीन में संयुक्त राज्य अमरीका के सहयोग से
सुदूर पूर्व मे जापान की प्रभुता का अंत कर
दिया होता, लेकिन ऐसा नही हुआ। इस समय
तक जापान ने रूस तथा 1917 ई० मे इंग्लैंड, फ्रांस
और इटली से गुप्त संधियाँ कर ली थी। अब यह
चीन को संयुक्त राज्य अमरीका की छत्रछाया से
अलग कर अपनी छत्रछाया मे लाना चाहता था।
इसके लिए पीकिंग स्थित जापानी राजदूत ने चीन
को ऐसी सलाह भी दी। इस बीच चीन में जापानी अख
बारो ने संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध आग
उगलना शुरू किया। यह कहा गया कि आश्वासनो
के बावजूद भी संयुक्त राज्य अमरीका ने चीन की

Scanned with CamScanner

विदेशियों के शोषण-दोहन से मुक्त नहीं किया एवं नए गणतंत्र को वित्तीय सहायता नहीं दी। दूसरी ओर यह कहा गया कि यदि चीन जापान की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाता है तो उसके अनेक कष्ट दूर हो जाएंगे। जापान कथनी और करनी के अंतर को समझता है। संयुक्त राज्य केवल कहना जानता है, करना नहीं जानता। जापान हर अमरीकी भूल को प्रकाशित करने लगा। यह भी कहा गया कि पश्चिमी देश सुदूर पूर्व में जापान की प्रभुता को मान्यता देते है।

1917 ई० के ग्रीष्म में जब चीन आंतरिक संकट से गुजर रहा था, अमरीका ने उसे केन्द्रीय शक्तियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने की अपेक्षा करने देश की स्थिति को सुधारने की

Scanned with CamScanner

सलाह दी थी। यह एक अच्छी सलाह थी। लेकिन इसके कुछ महीने पूर्व यह चीन को युद्ध में शामिल होने के लिए उकसा रहा था। जापान ने अमरीकी नीति के विरोधाभास को पकड़ लिया और इसे तिल का ताड़ करना शुरू किया। जापानी अखबारों में इसे पड़ोसी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बताया गया। इस पर संयुक्त राज्य ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। इसी समय जापान ने चीनियों से कहा कि उसे संयुक्त राज्य ने पीकिंग और वाशिंगटन के बीच किसी संवाद की प्रकृति का निर्धारण का अधिकार दे दिया है। चीनियों के लिए सुदूर पूर्व में जापान की प्रभुता की पश्चिमी मान्यता का यह एक अन्य संकेत साबित हुआ।

पीकिंग में फौजी शासन की स्थापना की गई और

Scanned with CamScanner

युद्ध मे शामिल हो गया। जापान ने इस नई स्थिति का लाभ उठाना शुरू किया। जब संयुक्त राज्य से चीन को कोई वित्तीय सहायता नही मिलने लगी तो यह काम स्वंय जापान ने करना शुरू किया। 1918 ई० में चीन की तुवान-ची-जु सरकार को ऋण पर ऋण दिया गया। कभी इसकी जमानत पर प्रांतीय कर, कभी हर तरह की सुविधा, जैसे रेल मार्ग निर्माण, खदान खोलने एंव खोलने एंव औद्योगिक उपक्रम स्थापित करने की माँग की गई। अधिकांश ऋण तो 1918 ई० मे युद्ध मे सहयोगी सहभागिता की करार शर्तों के अनुसार दिया गया। पीकिंग मे एक युद्ध सहभागिता परिषद (War participation Board) की स्थापना की गई। इसका मुख्य कार्य मित्र राष्ट्रों को सैनिक सहायता

Scanned with CamScanner

पहुँचना था। लेकिन इसका वास्तविक उद्देश्य चीन के आंतरिक सुधार के लिए जापान से ऋण लेना था जो अधिकारियों की जेब से चला गया। इसी समय से चीन में जापान से ऋण लेना था जो अधिक समय से चीन में जापान का प्रभाव बढ़ने लगा जो 1931 ई० के बाद भी कायम रहा। युद्ध सहभागिता परिषद के निर्देशन में दोनों देशों के बीच एक सैनिक समझौता हुआ जिसके अनुसार दोनों देशों ने युद्ध के लिए सामान्य योजनाएँ बनाने, चीनी सेना के लिए जापानी सलाहकारों की नियुक्ति, वित्त प्रदान करने पर सहमति प्रकट की। इसके बदले चीन ने जापान को अपने सैनिक संसाधनों की सूचना देने तथा उससे युद्ध सहभागिता परिषद के कार्यकलाप का अंत हो जाना था।

Scanned with CamScanner